

ईषि m. Feuer TRIK. 1, 1, 66. — Vgl. u. ईषि 2.
 ईषिका f. = ईषिका 1. BHARATA ZU AK. 2, 10, 33. ÇKDR. H. 920.
 ईष्म und ईष् = इष्म und इष् Uṇ. 1, 143, 152.
 ईसराफ astrol. aus dem Arabischen entlehnt Ind. St. 2, 268.
 ईक्ष्, ईक्षते; ऐक्षत; ऐक्षिष्ट; ऐक्षिष्यत P. 6, 4, 72, Sch. ईक्षा चक्रे 3, 1, 36,
 Sch.; ईक्षितुम्; ईक्षित; hier und da auch act. *streben nach, verlangen nach,*
sich angelegen sein lassen; im Sinne haben, gedenken zu Dhātup. 16,
 31. mit dem acc.: नेक्षतार्थान्प्रसङ्गेन न विरुद्धेन कर्मणा M. 4, 15. ईक्षते —
 अर्थसंचयान् BHAG. 16, 12. ऐक्षलौकिकमीक्षते मांसशाणितवर्धनम् MBH. 3,
 12853. पुनः पुनर्नायति कर्म चेक्षते 14, 884. तस्याराधनमीक्षते BHAG. 7, 22.
 M. 3, 126. देवायत्तं तद् (आहम्) ईक्षते पित्र्यायत्तं न तद्वेत् । पित्र्यायत्तं
 त्वीक्षमानः क्षिप्रं नश्यति सान्वयः ॥ 205. 4, 22. 9, 207. MBH. 4, 897. PAÑKĀT.
 I, 53. V. 69. KATHĀS. 22, 180. PRAB. 88, 17. शक्तस्यानीक्षमानस्य JĀGŪ. 2,
 116. mit dem infin.: प्रक्षर्तुमीक्षते MRĀKṢH. 170, 14. ÇĀK. 117. BHARTṚ. 2,
 6. Vid. 103. ÇUKAS. 44, 2. SĀH. D. 40, 16. BHARTṚ. 1, 11. 3, 106. 20, 32. act.:
 अलब्धमीक्षद्धर्मेण JĀGŪ. 1, 316. partic. ईक्षित *worauf man sein Streben*
gerichtet hat: कैनाक्षम् — ईक्षिता — दासीकर्तुम् PRAB. 104, 5. subst. n.
Bestreben, Bemühung: स्वयमीक्षितलब्धम् M. 9, 208. *Begehren, Ver-*
langen: साधयेक्षितमात्मनः MBH. 1, 1370. AMAR. 61. — CAUS. ईक्षयति,
 ऐक्षिक्तु Jmd antreiben: सुग्रीवमैक्षिक्तु BHARTṚ. 13, 51. सौमित्रिं गतुमैक्षि-
 क्तु 3, 53. 13, 119.
 — सम् dass. was das simpl.: यत् स्वः समीक्षते VS. 36, 21. 22. यज्ञकर्म
 समीक्षतां भवतः R. 1, 12, 8. तावदास्यकृतार्जनैर्न धनैर्वृत्तिं समीक्षामहे
 BHARTṚ. 3, 97. ÇĀNTIC. 4, 11. आपदः स समीक्षते PAÑKĀT. III, 87. न तेन —

विभूतयः शक्यतमाः समीक्षितुम् HIT. III, 113. राक्षसो ऽयमिक्षातुं वै नून-
 मावां समीक्षते MBH. 1, 6766. उपर्युपरि लोकस्य सर्वो गतुं समीक्षते 3,
 13861. ÇĀK. 117, v. l. partic. act.: राज्यं समीक्षता PAÑKĀT. I, 103. यात्रा
 समीक्षितम् R. 2, 78, 1. pass. impers.: समीक्षे मर्तुं तेन BHARTṚ. 14, 63. partic.
 pass.: यो (अभिषेको) ऽभूदाज्ञा समीक्षितः R. 2, 73, 3. किं ते समीक्षितम्
 PRAB. 107, 12. समीक्षितार्थाः BHARTṚ. 1, 17. यथासमीक्षितं स्थानम् PAÑKĀT.
 191, 8. subst. n. *Verlangen, Begehren:* सिद्धं नः समीक्षितम् HIT. 44, 7. प्र-
 तिशुश्राव ततस्मै — समीक्षितम् KATHĀS. 24, 126.

ईक्ष् m. = ईक्षा H. 430, Sch. ऊर्ध्वेक्ष् *das Bestreben nach oben zu kom-*
men VOP. 26, 190.

ईक्षा (von ईक्ष्) f. P. 3, 3, 103, Sch. VOP. 26, 190. 1) *Streben, Anstren-*
gung, Thätigkeit (उद्यम) TRIK. 3, 3, 456. H. an. 2, 596. MED. h. 2. वैश्य-
 स्पेक्षार्थिनः M. 2, 37. ईक्षातश्चेद्धनं भवेत् 9, 205. इक्ष्या ज्ञायते काम ईक्ष्या-
 र्था विवर्धते R. 3, 43, 38. अनीक्ष् MBH. 3, 1240. — 2) *Verlangen, Begehren,*
Wunsch AK. 1, 1, 7, 27. TRIK. H. 430. H. an. MED. P. 1, 3, 24, VĀRTT.
 जलनिधिमकरोत्तरितुमीक्षाम् R. 5, 72, 21. नयनयोरीक्षालिङ्गा यातरः SĀH. D.
 43, 8. वक्त्राक्षायाम् *nach dem Wunsch des Redenden* RV. PRĀT. 13, 1.
 परस्वेक्षा H. 431. वितेक्षा *nach Reichthümern* MBH. 3, 95 (PAÑKĀT. II, 167).
 अतश्च धार्मिकैः पुम्भिरनीक्षार्थः प्रशस्यते 94.

ईक्षामृग (ई० + मृ०) m. 1) *Wolf* AK. 2, 3, 7. TRIK. 3, 3, 55. H. 1291. an.
 4, 47. MED. g. 32. MBH. 1, 2572. R. 6, 79, 70. — 2) *eine Art Drama* TRIK.
 H. 284. H. an. MED. SĀH. D. 194, 3. fgg.

ईक्षावृक (ई० + वृ०) m. *Wolf* ÇABDAR. im ÇKDR.

